कहानी भारत छोड़ो आंदोलन की

आलेख: डॉ. महेश परिमल

आठ अगस्त 1942 को बम्बई (आज की मुम्बई) के गोवालिया टैंक मैदान पर अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने वह प्रस्ताव पारित किया था, जिसे 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव कहा गया। सन् 1885 से राष्ट्रीय कांग्रेस अनेक प्रस्ताव स्वीकार करती रही थी और ऐसा भी नहीं था कि इन प्रस्तावों के कोई परिणाम नहीं निकलते थे। लेकिन 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव एक ऐसा प्रस्ताव था, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक विशिष्ट मोड़ दिया, इस प्रस्ताव ने तो जैसे सारा राजनीतिक माहौल ही बदल डाला। सारे देश में एक अभूतपूर्व उत्साह की लहर दौड़ गई। लेकिन उस उत्साह को उस रात राष्ट्र के प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारी ने राष्ट्रीय विस्फोट में बदल दिया। तत्कालीन गोरी सरकार के इस कदम की जो तीव्र प्रतिक्रियाएँ हुई, वह सचमुच अभूतपूर्व थी।

मुंबई का गोवालिया टैंक, जहां 'भारत छोड़ो' आंदोलन का ऐलान हुआ, वहां से किए गए गांधी जी के भाषण का बिजली-सा असर हुआ था। उन्होंने कहा था, 'एक मंत्र है, छोटा-सा मंत्र। जो मैं आपको देता हूं। उसे आप अपने हृदय में अंकित कर सकते हैं और अपनी साँस द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं। वह मंत्र है- करो या मरो। या तो हम भारत को आजाद कराएँगे या इस कोशिश में अपनी जान दे देंगे।' गांधीजी के इस भाषण का जबर्दस्त असर हुआ। लोग सचमुच ही मरने पर उतारू हो गए।

9 अगस्त 1942 के दिन इस आंदोलन को लालबहादुर शास्त्री सरीखे एक छोटे से व्यक्ति ने एक बड़ा रूप दे दिया। शास्त्री जी की गिरफ्तारी हो गई। 9 अगस्त 1925 को ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के उद्देश्य से 'बिस्मिल' के नेतृत्व में हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ के 10 जुझारू कार्यकर्ताओं ने काकोरी कांड किया था, जिसकी यादें ताजा रखने के लिए पूरे देश में हर साल 9 अगस्त को काकोरी काण्ड स्मृति-दिवस मनाने की परंपरा भगत सिंह ने प्रारंभ कर दी थी और इस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे। गांधी जी ने एक सोची-समझी रणनीति के तहत 9 अगस्त 1942 का दिन चुना था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस आंदोलन के तहत तकरीबन 900 से ज्यादा लोग मारे गए। साठ हजार से ज्यादा लोग गिरफ्तार किए गए। इस आंदोलन की व्यूह रचना बहुत ही सटीक रूप से बुनी गई। चूंकि अंग्रेजी हुकूमत दूसरे विश्व युद्ध में पहले ही पस्त हो चुकी थी और जनता की चेतना भी आंदोलन की ओर झुक रही थी, लिहाजा 8 अगस्त 1942 की शाम को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बम्बई सत्र में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया गया था। हालांकि गांधी जी को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और तोड़फ़ोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन चलाते रहे।

यह भारत की आजादी में सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन था। दूसरे विश्व युद्ध में उलझे इंग्लैंड को भारत में ऐसे आंदोलन की उम्मीद नहीं थी। इस आंदोलन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज को दिल्ली चलो का नारा दिया था। इस आंदोलन की भनक लगते ही गांधी जी सहित कई दिग्गज नेताओं को जेल में डाल दिया गया।भारत छोड़ो आन्दोलन विश्वविख्यात काकोरी काण्ड के ठीक सत्रह साल बाद समूचे देश में एक साथ आरम्भ हुआ। यह भारत को तुरन्त आजाद करने के लिए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक सविनय अवज्ञा आन्दोलन था। क्रिप्स मिशन की विफ़लता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फ़ैसला लिया। उन हालात में कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोधि गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय थे। सारा देश मानो हिल गया। यदि सरकार उक्त कदम न उठाती तो क्या हाल होता, यह एक अन्तहीन बहस का विषय हो सकता है। लेकिन दमन के आधार पर यहाँ जमी हुई विदेशी सरकार और कोई तरीका जानती भी तो नहीं थी। तर्कसंगत अनुमान तो यही हो सकता है कि उक्त प्रस्ताव के फलस्वरूप एक

विराट जन-आंदोलन उठ खड़ा होता और सरकार को देर-सबेर दमन-चक्र चलाना ही पड़ता। 8 अगस्त, 1942 को जिस क्रांति का सूत्रपात हुआ, उसने असंदिग्ध रूप से यह जाहिर कर दिया कि अँग्रेजी हुकूमत टिक नहीं सकती।

भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था, जिसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था तो गाँधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फ़ासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी समय वायसराय लॉर्ड वावेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया। दरअसल सन् 1942 की क्रांति पिछले सत्तावन वर्ष से राष्ट्रीय काँग्रेस जो आंदोलन चला रही थी, उसका उफान था। इस उफान ने अँग्रेजों की आँखें खोल दी। इस उफान की पृष्ठभूमि में लोकमान्य तिलक और उनके बाद महात्मा द्वारा जगाई गई राष्ट्रीय चेतना थी।लिहाजा, सन् 42 के सिर्फ पाँच साल बाद ही भारत स्वतंत्र हो गया। निश्चय ही इसके साथ विभाजन की ह्रदय विदारक त्रासदी भी जुड़ी थी, फिर भी यह तथ्य तो स्पष्ट है ही किश्भारत छोड़ोश् आंदोलन ने अँग्रेजों के समक्ष स्पष्ट कर दिया था कि अब उनकी हुकूमत चल नहीं सकती।

(प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोटः विचार लेखक के अपने हैं, इन विचारों की जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय नहीं लेता।

उक्त आलेख माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई मनुज फीचर सर्विस के अंतर्गत निशुल्क प्रकाशनार्थ प्रेषित है। कृपया आलेख के अंत में मनुज फीचर सर्विस प्रकाशित करने का अनुरोध है।